Subject:- Sociology Date:- 10/05/2020
Class:- B-I (H) Paper:- 1st & Subsidiary

Topic:- सभ्यता और संस्कृति में अन्तर

By:- Dr. S.N. Choudhary, Guest Teacher
Marwari College, Darbhanga, 9507941619

Online Study Material No:- 75

प्रस्तावना

मैकाइवर (MacIver) ने सभ्यता को मनुष्य के जीवन की क्रियाओं को नियंत्रित करने के साधन के रूप में माना है। उन्होंने लिखा है - सभ्यता से उस सम्पूर्ण यन्त्र रचना एवं संगठन को समझा जाता है जिसे मनुष्य ने जीवन की दशाओं को नियंत्रित करने के लिए बनाया है। Weber (वेबर) के अनुसार सभ्यता के अन्तर्गत उपयोगी भौतिक वस्तुएँ उनके उत्पादन और प्राविधिक ढंग सम्मिलित हैं। Gillin & Gillin के शब्दों में, "सभ्यता संस्कृति का जटिल और विकसित रूप है।"

Spengler ने सभ्यता की परिभाषा, संस्कृति के उच्च स्वरूप के रूप में की है। इस प्रकार उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर सभ्यता की निम्नलिखित विशेषताओं का आभास मिलता है :-

1. सभ्यता प्रमुख रूप से संस्कृति का भौतिक पक्ष है।
2. सभ्यता के अन्तर्गत आनेवाली भौतिक वस्तुएँ एक साधन के रूप में हमारी आवश्यकताओं को पूरा करती हैं।
3. सभ्यता एक साधन है, इसलिए इसमें भौतिक पदार्थों के अतिरिक्त इन पदार्थों का निर्माण करने वाले ज्ञान अथवा तकनीकी को सम्मिलित किया जाता है।
4. सभ्यता का कोई अंग जब अनुपयोगी हो जाता है तब व्यक्ति उसे त्याग देते हैं।
5. सभ्यता एक परिवर्तनशील धारणा है।

संस्कृति और सभ्यता दोनों अत्यधिक कठिन और विवादास्पद धारणाएँ हैं। वर्तमान समाज में सभ्यता और संस्कृति दोनों का महत्वपूर्ण स्थान है। सभ्यता और संस्कृति में इतनी एकरूपता है कि दोनों में भेद बताना कठिन मालूम पड़ता है।

कांट ने पहले पहल संस्कृति और सभ्यता के भेद पर प्रकाश डाला था। उनके अनुसार सभ्यता बाहरी व्यवहार का विषय था, परन्तु संस्कृति में मानव के मन की आंतरिक स्थिति के तौर पर नैतिकता की बड़ी आवश्यकता होती है। मैकाइवर ने सभ्यता और संस्कृति के ऊपर काफी विचार किया। इन्होंने संस्कृति के तत्वों को भौतिक और अभौतिक दो भागों में विभक्त किया और उन्हे

Scanned with CamScanner

संस्कृति तथा सभ्यता के परस्पर अन्तर का आधार बनाया। उनके मतानुसार सभ्यता भौतिक संस्कृति ही है और वस्तुओं की उपयोगितावादी व्यवस्था से सम्बन्धित है एवं सभ्यता के पदार्थों को मापा जा सकता है तथा उनमें लगातार सुधार किया जा सकता है। दूसरी ओर संस्कृति समस्त अभौतिक मूल्यों, रूपों, बुद्धिजन्य साहसिक कार्यों के भावनात्मक मोह आदि का सम्मिलित रूप है। सामान्य अर्थ में सभ्यता का अभिप्राय व्यक्ति की बाहरी उपलब्धियाँ है जबकि संस्कृति का अभिप्राय सामाजिक तथा राजनैतिक संस्थाएँ, कलाकृतियाँ, कविता, नाटक आदि आत्मा से सम्बन्धित आन्तरिक उपलब्धियाँ है।

संस्कृति और सभ्यता की उपरोक्त व्याख्याओं से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि संस्कृति का सम्बन्ध ऐसी रूढ़ियों तथा मूल्यों से होता है जिन्हे उद्देश्य मानकर उनकी प्राप्ति के लिए साधन के तौर पर अनेक कार्य किए जाते हैं और पदार्थों का सहारा लिया जाता है। दूसरी ओर सभ्यता का तात्पर्य मानव द्वारा विकसित समस्त कार्य-व्यापार प्रणाली एवं ज्ञान है।

संस्कृति और सभ्यता में निम्नांकित अन्तर है:-

1. सभ्यता को मापने का एक निश्चित मापदण्ड होता है, पर संस्कृति की श्रेष्ठता एवं उपयोगिता अमापनिय है। किसी भौतिक पदार्थों की श्रेष्ठता या उपयोगिता को आसानी से मापा जा सकता है। जो बोझ हम ट्रक में लाद सकते है वह टायर गाड़ी में नही लाद सकते। इसी प्रकार हम किसी की योग्यता तथा अयोग्यता को पूरे विश्वास के साथ माप सकते है किंतु संस्कृति का कोई निश्चित मापदण्ड नही होता। यदि कोई कहे कि बर्नाड शा शेक्सपीयर से अच्छा नाटककार है, तो इन दोनो नाटककारों को किसी मापदण्ड पर मापकर नही बताया जा सकता है कि कौन बड़ा है और कौन छोटा नाटककार है। कुछ शेक्सपीयर के पक्ष में होंगे तो कुछ बर्नाड शा के पक्ष में। उसी प्रकार सभी धर्मों में कौन धर्म सबसे बड़ा है यह कोई नही कह सकता है। एक जगह एक धर्म की मान्यता है, तो दूसरी जगह दूसरे धर्म की। एक जगह एक धर्म मजबूत है तो दूसरी जगह दूसरा धर्म।

इस प्रकार हम कह सकते है कि संस्कृति मापने का कोई माप दण्ड नही है।

2. सभ्यता सदैव प्रगति करती है, किन्तु संस्कृति सदैव नही करती। मैकाइवर का कहना है कि सभ्यता प्रगति ही नही करती प्रत्युत सब

तक प्रगति करती रहती है, जब तक की किसी महान विपत्ति से नष्ट ना हो जाय।

किन्तु संस्कृति की सन् प्रगति नही होती है। कालीदास एवं शेक्सपीयर ने बड़ी ही उच्च कोटी की रचना कि किन्तु उसके बाद संस्कृत एवं अंग्रेजी साहित्य में उससे अच्छी रचना नही हुयी।

3. सभ्यता बाहरी तथा बुद्धिरहित, यंत्र सम्बन्धी, उपयोगितावादी तथा केवल साधनों से सम्बन्धित है, जबकि संस्कृति का सम्बन्ध केवल उद्देश्यो से है और यह आन्तरिक और अन्तिम है। मैथ्यू अर्नोल्ड ने इस सम्बन्ध में लिखा है, 'संस्कृति पूर्णता और सामंजस्ययुक्त पूर्णता का सामान्य पूर्णता का, ऐसी पूर्णता जिसका अभिप्राय कुछ प्राप्त करने की अपेक्षा कुछ बनाना हो, मन तथा आत्मा की अंत स्थिति का अध्ययन है न कि बाहरी परिस्थितियों के आकार प्रकार का," मैकाइवर इसी बात को इस प्रकार व्यक्त करते हैं 'जो कुछ हमारे पास है वह सभ्यता है और जो कुछ हम है वही संस्कृति है।'

4. सभ्यता बिना प्रयत्न के हस्तांतरित हो जाती है पर संस्कृति नही होती। संस्कृति को वे समझ नही सकते जिनको इसका ज्ञान नही है। जैसे-संगीत को वे नही समझ सकते, जिन्हे संगीत शास्त्र का ज्ञान नही है। कालीदास के मेघदूत का मर्म वही समझ सकता है, जो संस्कृत जानता है एवं जिसे काव्यशास्त्र का ज्ञान है। यदि हम बहुत बड़े कवि है, बहुत अच्छे खिलाड़ी है तो हम अपने इस गुणों को जब चाहे तब अपने बेटे को नही दे सकते।

5. सभ्यता सम्बन्धी रुचियाँ निश्चित रूप से स्पर्धात्मक अथवा निषेधक ही है, जबकि संस्कृति सम्बन्धी रुचियाँ सामान्य रूप से प्रयोगकारक अथवा प्रयोगात्मक है। उदाहरण स्वरूप एक ही क्षेत्र मे दो भिन्न-भिन्न आविष्कारों में से निम्नकोटि का अविष्कार उच्च कोटि के आविष्कार के सामने टिक नही सकेगा। परन्तु ललित कला से प्राप्त होने वाला आनंद, बौद्धिक कार्य, धार्मिक कार्य और अनुभव आदि संयोगात्मक होने के कारण स्पर्धात्मक नही है।

6. सभ्यता बिना किसी परिवर्तन या हानि के ग्रहण की जा सकती है, पर संस्कृति ग्रहण नही कि जा सकती। सभ्यता को कोई भी समाज उसी रूप मे ग्रहण कर सकता है पर संकृति ग्रहण नही कि जा सकती। सभ्यता को कोई भी समाज उसी

(4)

रूप में ग्रहण कर सकता है। मोटर अमेरिका में बनती है किन्तु वह संसार के किसी भी देश में उसी रूप में आ सकती है एवं उसका उसी रूप में व्यवहार हो सकता है।

S. N. Choudhary
Marwari College
L. N. M. U., D.B.G.